"होनी तो होकर रहे अनहोनी ना होय"

डॉ शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

"आलेख"

आज सुबह से ही कुछ ऐसे लोगों से मिलना हुआ जिन्होंने कोरोना वायरस को लेकर तरह-तरह की डरावनी बातें की। एक ने कहा कि यह कोरोना वायरस तो दिल्ली की बड़ी जनसंख्या की जान लेकर ही जाएगा। वहीं दूसरे ने कहा कि तीसरा ग्रहण 5 जुलाई को है तब तक ना जाने कितने संकट हम दिल्ली वालों को झेलने पड़ेंगे। किसी ने कहा कि आने वाले समय में लूटपाट और भूख से हमें लड़ना होगा। यह सब सुनकर मुझे लगा कि आज का आलेख इन सारे भय और डर से मुक्त कर देने वाला होना चाहिए।

पिछले 3 माह से मैं दिल्लीवासियों की वाणी में एक अजीब सा दृढ़ निश्चय देख रही हूं। चाहे कितनी भी भयावह घटनाएं हो रही हों लेकिन कुछ भी ऐसा नहीं है जो अनहोनी हो। और दिल्ली में घटित हो गया हो।

मित्रों, इस सृष्टि में सबके लिए स्थान है। हर समस्या का समाधान है। कोरोना वायरस के रूप में प्रकृति ने हमें एक छोटा सा झटका दिया है। हमें समझाने की चेष्टा की है कि हम प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करेंगे तो उसके गंभीर परिणाम हमें भुगतने होंगे। और यह न्यूटन के क्रिया और प्रतिक्रिया की तरह है। इसमें कुछ अनहोनी नहीं है।

एक वायरस आया जिसकी अभी दवाई भी नहीं बनी है इसलिए हम सब को सावधान होने की आवश्यकता है। संयम की आवश्यकता है किंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि कोई प्रलय होने वाली है। जिसके अंदर सब कुछ नष्ट होने वाला है। मैं अपने सोशल मीडिया के सभी मित्रों से हाथ जोड़कर यह अनुरोध करती हूं कि अनहोनी बातों को सोशल मीडिया में फैलाकर भय का वातावरण ना बनाएं। सब कुछ अच्छा ही होगा।

अभी कोरोना वायरस से निपटे ही नहीं थे कि लोगों ने चीन से युद्ध की बात करनी प्रारंभ कर दी। मेरी एक सहेली ने तो यहां तक कह डाला कि जो बुरा कोरोना वायरस ना कर सका। वह चीन के सैनिक करेंगे। मैंने उनको जवाब दिया। ना तो कोरोना भारतवासियों का अलग से अहित कर पाएगा। और ना ही घोषित युद्ध किसी भी देश के साथ किसी भी देश का इस काल में होगा।

माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा हमारे चीन के बॉर्डर पर निर्बाध रूप से सड़कें बनाने का काम किया जा रहा है। इसी को लेकर बहुत से लोग निराश और परेशान हैं। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि उनकी हिम्मत हो जाए कि वह भारत से घोषित युद्ध करने की जुर्रत कर पाएं।

मैं बार-बार इस बात को दोहरा रही हूं कि होनी तो होकर रहे अनहोनी ना होय। मुझे इसका अर्थ बहुत स्पष्ट रूप से समझ आ रहा है कि बहुत से लोग तरह-तरह की अनर्गल बातें करके सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। एक ऐसी बात जो सब में रोमांच भर दे, पैदा करने के लिए उसमें बहुत सारे रस भरने पड़ते हैं।

मेरी सबसे करबद्ध प्रार्थना है कि सावधान रहें। लेकिन डर में ना जिएं। ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला है। जिसे हम अनहोनी कहते हैं। सृष्टि का विनाश। प्रलय का आ जाना। पूरा देश और पूरा संसार खत्म हो जाना। यह बातें करके रोमांच तो आता है। लेकिन कभी-कभी इन बातों का मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा प्रतिकूल असर पड़ता है। इसलिए अपने मित्रों को रोकें और उनसे आग्रह करें कि सत्य किंतु अविश्वसनीय ऐसी बातों में अपना कीमती समय बर्बाद ना करें। कल्पनाएं अच्छी लगती हैं। लेकिन वह कल्पनाएं जो आसमान में रंग भरना सिखाएं, जो पृथ्वी पर पड़ी सूर्य की किरणों को सोना सा बना दें, किंतु वे कल्पनाएं जो वीभत्स रस से जुड़ी हों उन्हें सोशल मीडिया का हिस्सा ना बनाएं।